क्या महब्बत का अनोखा साज़ है
दो दिलों की एक सी आवाज़ है

बे निशां , बे नाम उसकी इंतिहा
ज़िंदगी आगाज़ ही आगाज़ है

कल तलक दिल था बिसाते नग़मगी
आज लेकिन इक शिकस्ता साज़ है

मुझको मत समझो गदाए मैकदा
अर्शे आज़म तक मेरी परवाज़ है

महव हूँ 'दर्शन' ख़याले यार में
मुझको अपनी बे खुदी पे नाज़ है

कहूं कैसे , क्या ऐ खुदा चाहता हूँ
करम की तेरे इंतिहा चाहता हूँ

ख़ुदी को मिटा कर ख़ुदा चाहता हूँ
जुनूं सा कोई रहनुमा चाहता हूँ

अज़ल से हूँ तेरे ही दर का भिखारी
मैं औरों से भी कुछ सिवा चाहता हूँ

नहीं जानता हूँ कि क्या तुझसे माँगूँ
जो मेरे लिए हो भला चाहता हूँ

मैं 'दर्शन' गुनहगार हूँ अपने सर पे
तेरा पाक साया सदा चाहता हूँ

ख़ाक से ताब-कहकशां , हमने तो जब किया सफ़र
इश्क़ मिला क़दम क़दम , हुस्न मिला नज़र नज़र

कोई मिले तो पूछ लें , मौसमे-गुल तो है मगर
गर्द ए ख़िज़ाँ पड़ी है क्यों , आइना ए बहार पर

ऐ दिल ए बेकरार आ , रो लें , तड़प लें , जाग लें
नींद की फ़िक्र क्या अभी , रात मिली है बे सहर

अपने ही दोस्त की तो हैं , जितनी भी हैं निशानियां
देर मिले तो सर झुका , क़ाबा मिले सलाम कर

चश्मे करम गरां सही , चश्मे करम न कीजिये
हाँ , मगर इक निगाहे नाज़ , 'दर्शने' खस्ता हाल पर

सुबू का दौर है , रक़सां है ज़िंदगी मेरी
हरीफ़े गर्दिशे दौरां है ज़िंदगी मेरी

नफ़स नफ़स मुझे लाज़िम है शुक्र का सज़दा
के मेरे दोस्त का एहसाँ है ज़िंदगी मेरी

खुलेगी आँख तो देखेंगे मंज़िले ताबीर
अभी तो ख़्वाब ए परेशां है ज़िंदगी मेरी

हो ज़िंदगी से मुलाक़ात किस तरह 'दर्शन'
नफ़स नफ़स तो गुरेज़ाँ है ज़िंदगी मेरी

जब कभी सकिये मदहोश की याद आती है
नश्शा बनकर मेरी रग रग में उतर जाती है

डर ये है टूट न जाए कभी मेरी तौबा
चार ज़ानिब से घटा घिर के चली आती है

मुस्कुराती है कली , फूल हँसे पड़ते हैं
मेरे महबूब का पैग़ाम सबा लाती है

जब कभी जीस्त के औराक़ पे जाती है नज़र
याद गुज़रे हुए अय्याम की आ जाती है

दूर के ढोल तो होते हैं सुहाने दर्शन
दूर से कितनी हसीं बर्क नज़र आती है